मूल्य रु. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख सलंग अंक १६५ मार्च-२०२१

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

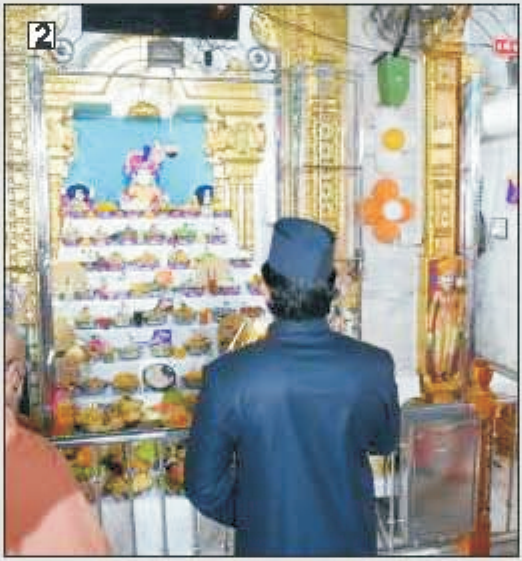

(१) मूली मंदिर में इस वर्ष वसंत पंचमी का उत्सव कोरोना के कारण सादगी से मनाया गया था। अन्नकूट आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री। (२) एप्रोच (बापुनगर) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री (३) नारणघाट मंदिर के २५ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन। (४) नारणपुरा मंदिर में पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन। (५) बामफलवाडी मंदिर में पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन। (६) अंबली अमदावाद मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १४ • अंक : १६४

मार्च-२०२१

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

नारायणपुरा, अहमदाबाद.

फोन : २७४९९५९७ • फोक्स : २७४१९५९७

प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए

फोन : २७४९९५९७

www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी

आज्ञा से

तंत्रीश्री

स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी

(महंत स्वामी)

मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

मो. ९३१३७०६०९५

magazine@swaminarayan.in

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष १०-०० • प्रति कॉपी १०-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	धर्मसुत कृष्ण की वंदना	०६
०४.	धोबी	०८
०५.	किस प्रकार के गुण से श्रीजी महाराज खुश होता है ?	१०
०७.	ॐ श्री नरनारायणाय नमः	१३
०८.	भगवान जैसा रखे - वैसे रहे	१५
०९.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१६
१०.	सत्संग बालवाटिका	१८
११.	भक्ति सुधा	२१
१२.	सत्संग समाचार	२४

अस्मदीयम्

भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणो में आत्मसमर्पण करने वाले पाँचसो परमहंसो प्रत्येक अति समर्थवान थे । स्वयं श्रीहरि कहते है कि ये हमारी मर्यादा में रहते है । हमने उनकी शक्ति छिपा रखी है । ये परम एक से एक बढकर है । ईश्वर की तरह पूजे जाये ऐसे है । ये संत जानते थे कि महाराज कैसे है । स्वयं प्रेमानंद स्वामी के पास से गायन कराये है । हमारे मरजी के सिवाय किसी के ताला नही टूटेगा । ऐसा मुझे जाने । मेरे आश्रित सभी नरनारी ये शब्द जिसके हृदय में रहता है । महाराज जैसी इच्छा करेगे । वैसे ही संसार में होगा । हम लोगो को चिंता करने की आवश्यकता नही है । उनके अखंड आश्रय में सबका कल्याण है । संसारी मनुष्य काफी विचार करते है । मैं यह कर दूगा ! वह कर दूगा ! मैं समर्थवान हूँ ! घनवान हूँ ! परिवार वाला हूँ ! शक्तिशाली हूँ ! बुद्धिमान विचारवान हूँ ! संसार में हर जगह जान पहचान है ! हमारे कहने में कितने धनपति है । अधिकारी है ! बड़ा समाज ! ऐसे मनुष्य का चलता कुछ नही है । महाराज के इच्छानुसार ही सबकुछ होता है । महाराज तो दयालु है । सभी प्राणियो के कल्याण को देखते है । वही योग्य और श्रेष्ठ होता है ।

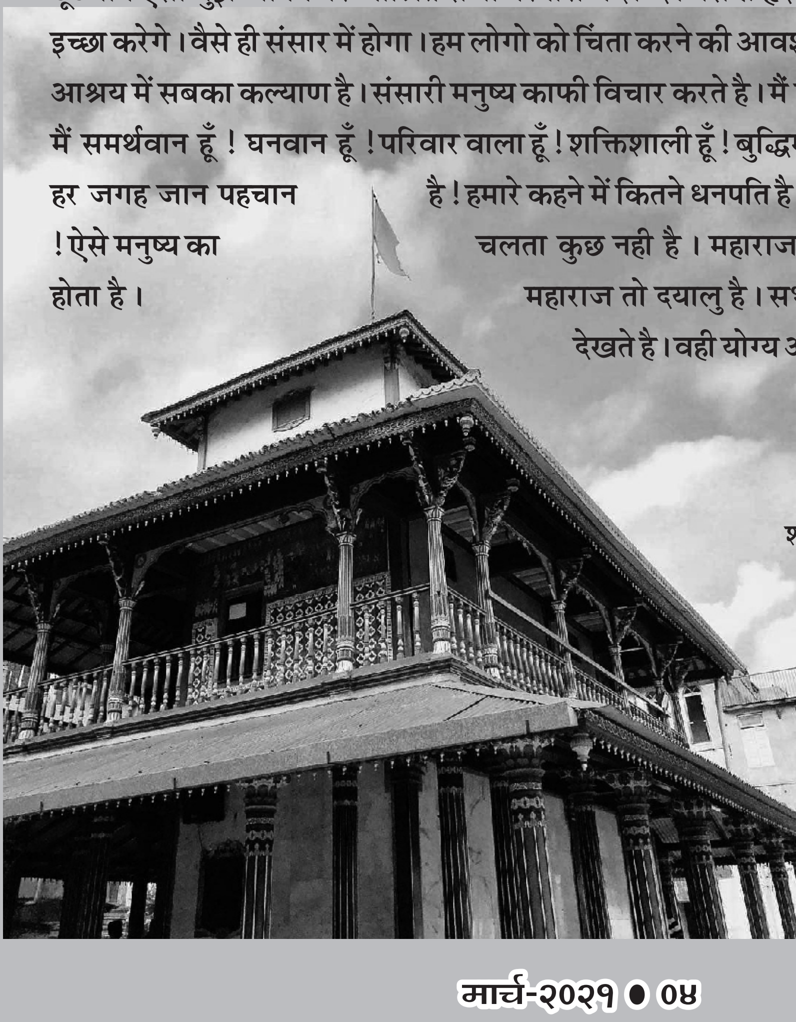

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०२१)

१६ मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर वसंत पंचमी के समैया अवसर पर दर्शनार्थी गण ।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापूनगर) पाटोत्सव अवसर पर आगमन ।

श्री स्वामिनारायण

धर्मसुत कृष्णने वंदन

– महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (कालुपुर, अमदावाद)

॥ श्रीहरिस्तुति उपजाति ॥ सत्संगिजीवरथ अभयराजा कृत ॥

सिताम्बरं नैष्ठिकवर्णिवेषं पीताम्बरं तं नटवर्यवेषम् ।
नवाम्बुदश्यामलसुन्दरारांगं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥१॥
शान्तान्तरत्वाश्रितमण्डलस्थं शृगांगारिगोपीगणमण्डलस्थम् ।
सरोजपत्राभविलोलनेत्रं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥२॥
वृन्देन्धन स्रग्धरपद्मपाणिं वृन्दावने सुस्वरवेणुपाणिम् ।
विचित्रपुष्पोत्तमचारुहारं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥३॥
समाधिविस्मापितसर्वलोकं रासक्रियाचित्रितदेवलोकम् ।
कन्दर्पदर्पोत्खननातिदक्षं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥४॥
स्वभक्तसत्पद्मविराजमानं वृन्दावनाकोड सुशोभमानम् ।
स्वानां हरन्तं हृदयानि दृष्ट्या वन्दे हरिं धर्मसुतं चं कृष्णम् ॥५॥
शिरः पटापीडनिजात्मलोभं मयूरपत्रालिकिरीटशोभम् ।
पद्मादिलक्ष्मांकित पादयुग्मं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥६॥
स्वदत्तभूषाः सहसा ददानं स्वांङ्गेषु भूषा विविधा दधानम् ।
सकालमायाभयदाभिधानं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥७॥
भक्तान्तरारिक्षपणप्रतापं गोगोपगोपीरिपुदैत्यतापम् ।
पादानमत्स्वीयजनैकबन्धुं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥८॥

सर्वावतारी सर्वोपरी भगवान श्री स्वामिनरायण उद्धव सम्प्रदाय के धर्मधुरी को धारण करके सम्पूर्ण विश्व में रामानंद स्वामी के शिष्यो और मुमुक्षुओ भगवतभक्तो को धर्म, भक्ति ज्ञान वैराग्य का उपदेश देकर स्वयं के सर्वोपरि स्वरुप की उपासना कराके आत्यंतिक मोक्ष के महामार्ग लाने के लिये गाँव-गाँव में विचरण करके बडे-बडे उत्सवो जन्माष्टमी, प्रबोधिनी, रामनवमी और फूल दौल समैया करके उसमें हजारो मानव मेदनी एकट्ठा करके इसमें सभी को मोक्ष का भागी बनाकर विचरण करना शुरु किये । उसमें सरधार से कारियाणी आकर बसंती-पंचमी का उत्सव मनाये थे । जिसमें गढपुरके अभराजा और उनके परिवार से श्रीहरि का योग हुआ । वे लोग श्रीहरि को अपने नगर ले आये । और बड़ा उत्सव करने की प्रार्थना किये थे । उसी समय स्वयं श्रीहरिने अपना दिव्य अवतार भगवान श्री नरनारायण का प्रागट्य दिन उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र को विक्रम संवत १८६१ के फाल्गुन वद-१ के दिन पुष्पदोलोत्सव किये । इसके बाद चैत्र महीने में रामनवमी की समैया के अवसर पर श्रीहरि का भी प्रागटोत्सव है । इस बात को जानकर अभयराजने भगवान श्रीहरि का षोडशोपचार तथा पूजा-अर्चना करके नगर में रुकने का आग्रह किये । उसी समय

श्रीहरिने अपने दिव्य स्वरुप का दर्शन दिये थे । मोरमुकुटधारी वंशी से शोभायमान करारविंद वाले पीले पीताम्बर को धारण करके श्रीकृष्ण चंद्ररुप में दर्शन किये । यही श्रीहरि मेरे आँगन में भगवान श्री स्वामिनारायण रुप में बिराजमान है । उस दोनो रुपो का दर्शन करके धन्य बने अभयराजा श्रीहरि को नम्र भाव से स्वयं देखे गये रुप का वर्णन स्तुति पूर्वक करते है । जिन शब्दो के अर्थ समझने का प्रयास करे ।

यह संस्कृत भाषा में अष्टक आर्षदृष्टा शतानंद मुनि ने परमात्मा के दिव्य स्वरुप का अभयराजा ने जो दर्शन किया था । वैसा ही दिव्य दर्शन समाधिमें हुआ था । उसका वर्णन करने के लिये अभयराजाके मुख से अलौकिक स्त्रोत अष्टक प्रगट किये थे । उसमें दोनो स्वरुप की एकता और समानता का दर्शन कराने के लिये प्रथम पद में जैसे ही भगवान श्रीहरि प्रत्यक्ष प्रमाण रुप में बिराजमान है । उस स्वरुप का वर्णन करने के लिये रुप को याद किये है । और दूसरे पद में जो दिव्य दर्शन दिये थे । उस रुप का वर्णन किये है । और तीसरे पद में दोनो स्वरुप में व्याप्त एकता, उसमें रहे गुण और धर्म के विशेषण का वर्णन किये थे । चौथे पद में दोनो अवतार धारण करके जिस नाम से शास्त्र और संसार में प्रसिद्ध नाम है । उन नामो का नम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूँ ।

सिताम्बरं नैष्ठिकवर्णिवेषं पीताम्बरं तं नटवर्यवेषम् ।
नवाम्बुदश्यामलसुन्दरारांगं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥१॥

शांति और सात्विक प्रतिक के समान सदैव श्वेत-सफेद वस्त्रो में नैष्ठिक ब्रह्मचारी बटुक वर्णी जैसे वेश को धारण करके मानव शरीर में भक्तो को दर्शन देते श्रीहरि तेज स्वरुप त्याग और वैराग्य के समान प्रतीक रुप पीताम्बर पीले वस्त्र और आभूषण धारण करके श्रेष्ठ नट की तरह क्रीडा अर्थात् रास क्रिडा करने की तैयारी जैसा सुंदर वेश धारण किये है । इन दोनो वेशो को धारण करने वाला यह आप का रुप नये मेघ को आषाढ महीने के समय में घने श्याम होते है । ऐसे श्याम और स्नेह युक्त मनमोहक मूर्ति का प्रत्यक्ष दर्शन होता है । वैसे ही समाधिमें दर्शन देते है । ऐसे दर्मदेव के पुत्र रुप में प्रगट होकर साक्षात् परमात्मा श्रीकृष्ण मैं आप के चरणो का साष्टांग वंदन करता हूँ । (१)

शान्तान्तरत्वाश्रितमण्डलस्थं शृगांगारिगोपीगणमण्डलस्थम् ।
सरोजपत्राभविलोलनेत्रं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥२॥

आप के दर्शन मात्र से हृदय में काम, क्रोध, लोभ आदि अन्तः शत्रु का नाश हो जाता है । ऐसे अपने आश्रित परमहंसो के मध्य रहते है । अर्थात् अपने भक्तो की विशाल सभा में सदैव दर्शन देते है । उसी प्रकार अनेक प्रकार की श्रृंगार से सजकर रासक्रीडा की याचना करती गोपियों के मध्य विराजमान है । उन दोनो रुपो की शोभा तो ऐसी है । जिसके नेत्र विशाल कमल की पंखुडी जैसी चपल है । ऐसे धर्मदेव के पुत्र रुप में प्रगट हुए साक्षात् परमात्मा श्रीकृष्ण आप के चरणों मे मैं साष्टांग प्रणाम करता हूँ । (२)

वृन्देन्धन स्रग्धरपद्मपाणिं वृन्दावने सुस्वरवेणुपाणिम् ।
विचित्रपुष्पोत्तमचारुहारं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥३॥

इस प्रत्यक्ष विशाल सभा में अपने भक्तो के हित के लिये अनुकरणीय हो . इस लिये अपने दाहिने कमलक्त हाथो में तुलसी पुष्प है । आप श्रीकृष्ण स्वरुप में वृंदावन में गोपियो के साथ रास क्रिडा करने के लिये सुंदर मधुरवाली मुरती रखे हुए है । समाधिमें हुए दर्शन और प्रत्यक्ष दर्शन में समनाता है । इन दोनो रुपो के गले में सुगंधित रंग-बिरंगी पुष्पो की माला शोभा दे रही है । धर्मदेव के पुत्र रुप में प्रगट हुए । साक्षात् परमात्मा श्रीकृष्ण आप के चरणो की साष्टांग वंदना करता हूँ । (३)

समाधिविस्मापितसर्वलोकं रासक्रियाचित्रितदेवलोकम् ।
कन्दर्पदर्पोत्खननातिदक्षं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥४॥

इस विकराल कलियगु में हजारो लोगो को समाधिकराके संसार के लोगो को आश्चर्य चकित करते हो । उसी प्रकार गोपियो के साथ दिव्य रासलीला करके पूरे देव समाज को विस्मय में कर दिये । आप के दिव्य

(पेईज नं. १४)

धोबी

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने आराध्य देव श्री सहजांद स्वामीने शिक्षापत्री श्लोक नं. २९ मे कहते है कि शास्त्र के बारे में श्रीकृष्ण भगवान तथा श्री कृष्ण भगवानने जो वाराह आदि अवतार का खंडन किया गया हो । उस शास्त्र को कभी भी माने और सुने नही ।

जो जो अवतार लेकर जैसी-जैसी लीला किये । उसे गाने-सुनने से जीव को बडी उबलब्धी मिलती है । भगवान की लीला का वर्णन श्रीजी महाराज ने कारियाणी पाठ-६ में कहे है कि, भगवान अपने प्रेमालु भक्तो के प्रेम के लिये प्रगट होते है । यही उनका मुख्य उद्देश्य होता है । प्रत्येक कल्पमन्वतर और युग-युग में भगवान कई अवतारो में प्रगट हुए है । जिस की कथा त्रिकालज्ञानी अषिदृष्टा-ऋथियो मुनियो ने अवतरण से पहले की कथाये लिखे है । उसमें आदि कवि वाल्मिकीने श्रीमद् रामायण की रचना सत्युग में किये । इसके बाद द्वापर युग में भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम का अवतरव हुआ ता । ऐसी आश्चर्य जनक सत्य कथाये अन्य पुराणो में भी है ।

भगवान श्रीराम की ग्यारह हजार वर्ष की आयु की अनंतकथाओ में पाँच हजार जितनी रामावतार की कथाओ में आज भी विश्व के ७६ देशो में गाया जाता है । उस रामावतार के चरित्र की विविधता विविधरचयिता के सिद्धान्त भेद के कारण विस्तृत है । उसमं से एक कथा भूतकाल में और सम्प्रत काल में तो भगवान राम के विषय में अच्छे लोगो को भ्रमित कर देती है । वैसी एक कथा का इतिहास लिखा है । जिस में कई प्रश्न उठते है । उस प्रसंग में एक विज्ञान युग में लोग श्रीरामजी के जीवन में जो घटना है । श्रीजगत जननी जगदंबा सीताजी गर्भवती थी । एक धोबी के बोलने के कारण सती सीताजी को वाल्मिकी ऋषी के आश्रम में भेज दिये थे । इस कथा को सुनकर विश्वास करना बड़ा कठिन हो जाता है ।

भगवान की कथाओ में एक नही अनेक कथाये रहस्य से भरी हुई है । भगवान गरीब से गरीब जीव के अन्तर की वंदना को नजर अंदाज नहीं करते है । चाहे जीव की वेदना हो, भक्तिभाव या मनोक कामना, मनुष्य लीला में उसे पूर्ण न्याय दिये है । इस प्रसंग में धूर्त धोबी के बोलने और श्रीराम का सीता के त्याग की जड में एक रहस्यमयी कथा है । मिथिला नरेश की जनकजी की पुत्री बाल्यावस्था में अपने सखियो के साथ बाग बगीचे में धुमने निकली है । प्रकृति स्वयं प्रकृति का आनंद ले रही थी । वहाँ एक पेड पर देव तोता अपने पत्नी को देव भाषा में श्रीराम कथा सुना रहे थे । बाल्मिकी रामायण के अनुसार मिथिला नगरी के राजा की पुत्री को एक अयोध्या के राजा जो सुंदर चरित्र कन और सद्‌गुणो से पूर्ण होगे । उसकी पत्नी जनकनंदिनी सुंदर शीतलगुण की भंडार होगी । इस प्रकरा की चर्चा कथा कह रहे थे । ऐसा आश्चर्य भरा दृश्य और वार्तालाप सखियो के साथ श्री जानकीजी सुन रही ती । शुक और शुकी जो वार्ता कर रहे थे । उसमें उनके जीवन की कहानी जुडी थी । इस कारण से उत्सुकता पूर्वक सुनी । सखी-सहेलियो से सीताजी बोली : हे सखियो ! उस वृक्ष पर बैठे हुए शुक (तोता) शुकी को हमारे पास लाओ . वे हमारे जीवन से जुडी हुई बाते कर रहे है । मुझे अपने जीवन से जुडी घटनाओ के विषय में उनके मुख से सुनना है । मिथिला के राजा की पुत्री श्री सीताजी के माँग पर अति चतुर सखियो ने उस तोते के तोडे को उनके पास लेकर आ गयी । श्री सीताजीने कहा, हे शुक दम्पत्ति ! आप हमारे साथ संसार में स्वर्ग के समान वैभव युक्त

मेरे राज महल में चलिये । मैं आप का अपने परिवार की तरह सेवा करुँगी । यह बात सुनकर शुक दम्पत्ति धबरा गये । और बोले कि, हमारे लिये वन-पर्वत के अलावा कोई स्वर्ग नही होता है । आप का राजभवन हमारे लिये जोलखाना समान है । पुनः सीताजी बोली ! हे शुकी मैं आप को अपने महल में अवश्य ले जाऊगी । क्योकि आप से अतिशय प्रेम मेरा है । शुकी बोली ! देवी सुनिये ! मैं गर्भवती हूँ । संतानो को जन्म देना है । हमारे बच्चे जब बडे होकर आकाशचर हो जायेगे तो मैं प्रकृति की सौगंधखाती हूँ । इसके बाद में आप के राजमहल में रहने आ जाऊगी । सीताजी का प्राणियो के प्रति अगाधप्रेम था । इस कारण से शुकी को आग्रह और वेदना पर ध्यान नही दी । हरि की ईच्छा से भूल भी हो जाती है । शुक के देखते हुए शुकी को सीताजी लेकर मिथिला राजभवन की तरफ चल दी । उसी समय शुक्रजी सूर्य के सामने द्रष्टि करके श्राप दिये । है सुंदरी ! आप हमारी गर्भवती पत्नी को जबरन हमसे अलग कर रही हो । उसके पेटमें स्थित बच्चे जन्म लेने के बाद अपने पिता का मुख नही देख पायेगे । तो मैं आप को शाप देता हूँ कि यही घटना आप के जीवन में भी घटित हो । आप गर्भवती होगी । आप का पति आप का त्याग करदेगा । आप के बच्चे भी अपने पिता का मुख नही देखेगे ।

अपने पूर्व जन्म के शत्रुता के कारण तोता धोबी के घर जन्म लिया । और शुकी धोबिन हुई । वही धोबी अपने पत्नी के माध्यम से श्रीराम के उपर आक्षेपित किया । इसको सुनकर तथा शुक का श्राप स्वीकार करके सीताजी को वाल्मिकी आश्रम में भेंज दिये थे । संसार के जीवो को भी कर्म का बंधन लागू पडता है । लेकिन भगवान कर्माधीन नही है । लेकिन गरीब लाचार जीव की मनोकामना पूर्ण करने के लिये स्वेच्छा से शाप को भक्ति भाव से स्वीकार किये थे । इस प्रसंग को यदि समझ लेगे तो श्रीराम द्वारा व्यक्त गर्भवती सीता की कथा अपने आप समझ में आ जायेगी ।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में ।

From-IV (see Rule : 8)

१.	प्रकाशक	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव गादी के अधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१

मैं शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य है।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदाबाद-१ (प्रकाशक की साईन)

किस प्रकार के गुण से श्रीजी महाराज खुश होता है ?

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्रीजी महाराज के मुख से प्रसादी के अमृत बचन अर्थात् वचनामृत । इस वचनामृत ग्रन्थ का सम्पादन संप्रदाय के बड़े विद्वान और ब्रह्मनिष्ठ पाँच नंद संत मिलतकर किये थे । इस कार्य के लिये इनकी नियुक्ति स्वयं श्रीजी महाराजने किया था । ये पाँच अग्रगण्य सद्गुरु अर्थात् मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी और शुकानंद स्वामी नंद संतो का जीवन चरित्र सत्संग में प्रसिद्ध है। इसके पहले कितने बड़े थे । उसे देखे तो सत्संगिभूषण अंश-३, अध्याय-४१ में स्वयं श्रीहरि उनके पुराने रुपो को याद किये है । जिस अनुसार मुक्तानंद मुनि अर्थात् नारदमुनि, ब्रह्मानंद स्वामी अर्थात् ब्रह्ममुनि, नित्यानंद स्वामी आर्थात व्यास मुनि, शुकानंद स्वामी अर्थात् पहले के शुकमुनि और गोपालानंद स्वामी अर्थात् दत्तात्रेय भगवान।

मुक्तानंदोऽथ गोपालानंदो मुनिरुदारधीः ॥
ब्रह्मानंदमुनि र्नित्यानंदः शुकमुनि स्तथा ॥१॥
तैः पञ्चभिः सुसंगत्य श्रीहर्युक्तिः सुधोदधिः ॥
लिखितः शोधितश्चापि यथा बुद्धियथा श्रुतम् ॥२॥

इस श्लोक के प्रमाणानुसार ब्रह्मानंद मुनि सहित पाँच संतो की नियुक्ति स्वंय श्रीहरिने किया है । उनके मतानुसार जिस प्रकार से सुना था । उस अनुसार सम्पादन के वचनामृत लिखे है । वचनामृत ग्रंन्थ के अन्तिम पंक्ति में ब्रह्मानंद स्वामी का नाम है । सामाजिक व्यवहार में और शास्त्र में पाँच व्यक्तियो के समूह को पंच कहा जाता है। पंच परमेश्वर की कहावत भी कही जाती है । वर्तमान समय में कोई बड़ा निर्णय लेना हो, खोज करना हो । और इतना ही नही बडी सरकारी संस्था में भंगार वाली वस्तु को बेचने के लिये । उस संस्था के मुखिया के साथ विश्वासपात्र कुशल अधिकारी नियुक्त किये जाते है । इस कारण से श्रीजी महाराज ने अपने वचनो को संपादन करने के लिये पाँच संतो का चयन किये थे । उत्कृष्ट वस्तु ग्रहण करके विसंगतता दूर कर सकते है।

ग.प्र.प्र. ३८ के अनुसार जो लोग सत्संगी है । जब से सत्संग कर रहे है । वहाँ से अपने मन का मूल्यांकन करना चाहिए । 'कि पहले वर्ष में मेरा कैसा मन था अब कैसा हो गया है । कितना भगवान के प्रति लगाव था । और कितनी संसार के प्रति लगाव था । इस प्रकार वर्षोतक इस पर विचार करते रहना चाहिए । जगत की वासना धीरे धीरे त्यागना चाहिए । श्रीजी महाराजने व्यापारी के घर पर खाता वही लेखन की बात किये थे।

वि.स. १८८५ के कार्तिक सुदी-१० दशमी का दिन अर्थात् १८८५ को नये वर्ष के दशवे दिन स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा के मध्य दादा खाचर के दरबारगढ में विराजमान होकर जो वचनामृत कहे थे । आफ सभी जीवन में लाये । इस उद्देश्य से इसका निरुपण किया गया है।

श्रीजी महाराज कहते है कि ' भगवान सम्बन्धित भक्ति, उपासना, सेवा, श्रद्धा, धर्मनिष्ठा इत्यादि करके फल की इच्छा नही रखे । ऐसा शास्त्रो में कहा गया है । इतना तो ईच्छा रखना कि ''इसके प्रभु हमारे उपर खुश हो । इच्छा बिना छोड देना उसे तमो गुणी कहा जा सकता है । भगवान की भक्ति करे, उससे खुश होकर भगवान से फल की ईच्छा रखे । जो विना दूसरी ईच्छा

किय विना चतुर्धामुक्ति फल की प्राप्ति होती है।

भगवान काफी सेवा के बाद भक्ति के बाद उसके उपर खुश होते है। गरीब के उपर भी खुश होते है। गरीब हो वह श्रद्धा सहित जल, पत्र, फल, फूल भगवान को अर्पण करे तो इससे भी प्रभु खुश हो जाते है। क्योंकि भगवान तो महान है। वह राजा जैसे है। उनके नाम का एक श्लोक पढ लेने से उसे गाँव दे देते है। ऐसे भगवान खुश हो जाते है।

भगवान का सच्चा भक्त किसे कहा जा सकता है ''यदि व्यक्ति के शरीर में कोई भयानक रोग हो गाय हो। भोजन करने को नही मिले। वस्त्र भी नही मिले। अर्थात् कितने भी बड़ा कष्ट आ जाये। या बड़ा सुख भी मिल जाये। तो भी भगवान की उपासना, भक्ति, नियम, धर्म, श्रद्धा इसमें रंच मात्र भी कमी न रहे। उसे वास्तव में हरिभक्त कह सकते है।

बाद में राजबाईने प्रश्न करवायी की ''हे महाराज ! किस गुण से आप खुश होते हो। किस दौष से आप नाराज हो जाते हो। तब श्रीजी महाराजजी बोले ''इतना तो वचन में दोष है। या तो अन्तर में कुछ विशेष करना हो, उसे एक बार में कह देना चाहिए। महाराज ! आज जैसा बोले वैसा मैं करु। बार-बार न कहना पडे। आप क्या कैसे करना है बताये ? मैं किसी से बात कर उसमें बीच में बोलने वाला मुझे अच्छा नही लगता है। भगवान का ध्यान करना तथा धर्म का पालन करना चाहिए। भक्ति करनी चाहिए। शुभ कार्य जो करना हो। जो उसे भगवान के उपर छोड देता है। ''भगवान चाहेगे तो कार्य होगा''। मैं यह कर दूँगा। मैं वह कर दूँगा। वह भगवान के बल को नही माने तो अच्छी बात नही है। दूसरो कर्मो में शर्म नही करे। आलस्य नही करे। भगवान की बाते करे। ऐसे व्यक्ति से भगवान खुश रहते है। त्याग और भक्ति में अभिमान नही रखे। सभा में उचित जगह पर बैठे। किसी सभा में धक्का मार के जगह ले वह अच्छा नही लगता है। यदि कोई औरत अपने अंग को ढंकी हो और लज्जा रके वह प्रिय होती है। वह चले तो नजरे नीचे रखथी है। ईधर-उधर नही देखे। हमारे दर्शन हेतु माने पर कोई भाई हो या बहन हो, पशु, पक्षी, कुत्ता, किली देखे। फिर वही पर हमारा दर्शन करे यह हमे प्रिय नही है। साधु को कष्ट देना अतिशय दुख की बात है। कपटी लोग मुझे प्रिय नही है। हरिभक्त आपस में मिलकर रहे। यह हमें अच्छा लगता है।

उपरोक्त वचनामृत का संक्षिप्त में व्याख्या करे तो जो कहा गया है उसमें मात्र श्रीहरि की प्रसन्नता भगवान की कृपा की ईच्छा रखे। भगवान यदि खुश हो जाते है तो भक्त को सब कुछ प्रदान कर देते है। भगवान के जो भक्त होते है। वे चार प्रकार की मुक्ति भी नही चाहते है। यह चार प्रकार की मुक्ति कौन सी है ? पहला भगवान के लोक में रहना, दूसरा भगवान के पास रहा तीसरा भगवान के समान रुप प्राप्त करना चौथा भगवान के समान ऐश्वर्य प्राप्त करना। भगवान का सच्चा भक्त मात्र भगवान की सेवा की ईच्छा रखता है। किसलिये ? जो भगवान का भक्त चार प्रकार के लाभ से भक्ति करता है। वह सकामी भक्त कहा जाता है। इन चारो से परे जो भक्त भक्ति करता है वह निष्काम भक्त कहा जाता है। ऐसे निष्काम भक्त को प्रभुअपनी सेवा में रखते है। वह भक्त न चाहते हु भी सुखो को प्राप्त करता है। निष्काम भक्त को गीता में भगवानने ज्ञानी कहा है। सकाम भक्त को अथार्थी कहे है। भगवान को खुश करने के लिये गरीब या धनी होना कोई माने नही रखता है। पत, पुण्य, फल भगवान की सेवा में श्रद्धा और ईश्वरपन का ध्यान दिया जाता है। भगवान के चरणो में

शायद तुलसी दल की सेवा दे पाये । लेकिन घर के क्यारी मे संतुलसी के पत्र चुनकर श्रीहरि के चित्र के सामने प्रेम से तुलसी पत्र को अर्पण करना चाहिए । सुगमता हो तो क्यारी में फूल उगाकर चढाना चाहिए । भाव से सुख मेवा मिश्री का भोग लगाना चाहिए । जल रखना चाहिए । सिंहासन के भोजन का भोग लगाना चाहिए । श्रद्धा और भाव होने पर भगवान अवश्य ग्रहण करते है । भगवान मानव रुप में विचरण किये तब असंख्य लोगोने लाभ उठाया है । लेकिन अन्तध्यान होने पर भी भगवान की मूर्ति ने कई भक्तो के प्रेम के कारण भोग को स्वीकारा है । मात्र नाम के लिये प्रभु को कोई व्यक्ति कुछ समर्पित करे तो प्रबु उसे स्वीकार नही करते है ।

सच्चे भक्त की परीक्षा अतिशय दुःख के अतिशय सुख में होता है । कभी-कभी बच्चे भक्त दुःखी होने पर उसका दोष भगवान के उपर रख देते है । तथा सत्संग से अलग हो जाते है । सुखी हो जाने पर कई भक्त नियम, धर्म, भक्ति में शितिल हो जाते है । सुख-दुःख का भाव समाप्त करके, जो भक्ति स्थिर रहता है । वही सच्चा हरिभक् होता है ।

वर्तमान समय में मूर्ति स्वरुप अपने भगवान मिले है । मूर्ति के मर्यादानुसार भगवान हम लोगो से बोलते नही है । यह अंतर में समझने की बात है । वहाँ श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री या बहनो के लिये प.पू. गादीवालाश्री अथवा यदि योग न हो सके तो बड़े संतो को रख सकते है । एक बार उत्तर मिल जाने के बाद इस बात को दोहराने से बड़े लोग तुरंत समझ जाते है । कि यह हमसे पूछा जा रहा है । लेकिन उनकी धैर्य को नही रोका जा सकता है । बार-बार बडे लोगो को नही कहा जाता है । बड़ा व्यक्ति जब बात करे । उसके मध्य में नही बोलना चाहिए । अच्छा कार्य करना हो तो यह नही मानना चाहिए कि जब प्रभु चाहेगे तब होगा । जो कुछ कार्य करना हो उसे प्रभु को आगे रखना चाहिए । सफलता का यश भगवान को देना चाहिए । मैने किया । मै करुगा । इसका अभिमान नही करना चाहिए । भगवान की ईच्छा बगैर कुछ नही होता है ।

कई मनुष्य ऐसे मिलते है । जिको मंदिर में जाने के लिये लज्जा और् शरम महसूस होता है । मंदिर-कीर्तन इत्यादि में आलस्य आता है । व्यवहारिक प्रत्येक कार्य में जाते है । विचार एवम् वाणी से पता चलता है कि उन्हे भगवान प्रिय नही है । सभा का महत्व भगवान सिखाये है । महिलाओ को लज्जा सिखाई जाती है । शिक्षापत्री में भी महिलायो को किस प्रकार के कपडे पहनना है । उसे श्रीहरि ने श्लोक में लिखे है ।

भगवान का दर्शन करते समय हम एकाग्र चित्त होकर दर्शन करना चाहिए । बगल में कौन आया और कौन गया । किसकी आवाज आ रही है । इस सभी क्रिया-कलायो को छोडकर भगवान की पूजा अर्चना करना चाहिए । यदि कोई भक्त दर्शन में व्यस्त हो । उस समय किसी परिचित भक्त को परेशान नही करना चाहिए । उससे बोलकर अपनी उपस्थिति दर्ज नही करना चाहिए। ''जय स्वामिनारायण'' भी कहना हो तो भक्त का दरशन हो जाने के बाद कहना चाहिए । भगवान तथा बडे लोगो से कपट नही रखना चाहिए । निष्कपट होकर बात करना चाहिए । उसे आप के कष्ट दूर होते है । मान, क्रोधइत्यादि अन्तःशत्रुओ पर विजय पाया जाता है । संतो-भक्तो की महिमा समझना चाहिए । हर जगह पर आना-कानी नही चलाना चाहिए ।

श्री नरनारायणदेव के चरण कमल से यही प्रार्थना है कि हम सब के आराध्य देव श्रीहरि हम सब के गुरु स्थान पर विराजमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज के प्रिय बने रहे ।

ॐ श्री नरनारायणाय नमः

- नवनीतभाई भगत (गढडा)

भरत खंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव है। दिव्य बद्रिकाश्रमधाम से एक ही भगवान के दो स्वरुप विराजमान है।

छो तो एक ने दिसो छो दोय,
तेनो भेद जाने जन कोय ।

श्री नरनारायणदेव कृपालु है । पता है ? स्वयं बोरडी के नीचे बैठकर तपस्या करते है। इस तप बल का फल भक्तजनो को देते है।

तपस्या नरनारायण भगवान करते है । हम लोग कुछ भी नही करते है फिर भी सुखी है । एक दिन का उपवास करन ापडता है । तो पेडा तथा अच्छा फलाहार करने पर भी शरीर शिथिल हो जाती है । श्री नरनारायणदेव की कृपा देखे । तपस्या स्वयं करते है । फिल दूसरे को प्रदान कर देते है। तीन घंटे तक पलाठी मार कर बैठना कठिन है । यहाँ पर तपस्या की बात करना कठिन है । एक बेला का उपवास करना हो तो हम लोग सोचते है कि यह कैसे होगा ? कैसे तपस्या करे ? घन्यवाद है श्री नरनारायणदेव की छत्रछाया में बैठे है। मुक्तानंद गाते है ।उसकी पंक्ति में

व्हालो भरतखंडना नरनारने पोते तप करीरे
आपे फल सोय, बद्रापति प्रबल प्रतपा छे
हरिना तप केरा पुण्य प्रताप थी,
थयां शुद्ध मन रे हरिजन सर्वे कोय, बद्रिपति
प्रबल प्रताप छे

नवजात शिशु के बिमार हो जाने से के दवा खाने से बालक ठीक हो जाता है । ऐसी अपनी आयुर्वेदिक प्रणाली है। उसी प्रकार नरनारायणदेव तपस्या करते थे । और तप के पुण्य का फल भक्तो को मिलता है।

उस तप्सया का प्रत्यक्ष फल सामने दिखाई देता है। इस धनधोर कलियुग में व्यसन, फैशन और माया का प्रचंड प्रभाव में भक्त भगवान की आज्ञा का सतयुग के समान पालन करते है। कलियुग अपना प्रभाव सत्संगी के उपर नही दिखा पाता है। शुद्ध नियमो का पालन करते है। ये सब अपने श्री नरनारायणदेव का प्रताप है। पंच विषय में फँसता नही है। सोचिये भगवान को तपस्या करने की क्या आवश्यकता है ? स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण भगवान है। फिर भी तपस्या कि क्या आवश्यता है।

माता को पता है कि मेरा बच्चा दवा नही खायेगा। कडवी लगेगी। उल्टी कर देगा। इस कारण से बालक के बदले में दवा खाता है। दवा का तत्व दूधसे मिल जाता है। माँ के दूधसे बच्चा ठीक हो जाता है । हमारी माता के समान श्री नरनारायणदेव का स्वभाव है।

शंकराचार्यजी प्रभु ने कहा। कलियुग में मनुष्यो को आप का दर्शन कैसे मिलेगा ? भगवान श्री नरनारायणदेव बोले आप नारदकुंड में स्नान करे वहाँ पर मेरा स्वरुप प्राप्त होगा । उस स्वरुप की आप स्थापना करना। जो इस स्वरुप का दर्शन करेगा। उसे बद्रिकाश्रम का फल मिलेगा। वर्तमान समय में बद्रिकाश्रम में जो श्री नरनारायणदेव रहते है। वे शंकराचार्य स्थापित किये थे। वे आज भी दिव्य दर्शन दे रहे है।

बद्रीनारायण भगवान है। सेवा भी राजाधिराज की तरह जीवन तपस्वी की तरह है। उस कारण से शरीर का तापमान बद जाता है। हिमालय में अधिक ठंड होने के बावजूद भी ठंडे पानी से अभिषेक करते है। चंदन लगाया जाता है। बद्रीनारायण में पहले नरनारायणदेव की पूजा होती है। और मंदिर के बाहर बैठी लक्ष्मीजी की पूजा होती है । हर जगह पर लक्ष्मीजी के साथ नारायण होते है । लेकिन यहाँ पर तपस्वी वेष में होने के कारण लक्ष्मीजी को अलग रखा गया है। उन्होने संसार को प्रभु ने आदर्श बताया है । तपस्वी को हमेसा स्त्री से दूर रहना चाहिए । और तपस्वी स्त्री हो तो पुरुष को दूर रहना चाहिए।

बद्रिकाश्रम में जाना बहुत कठिन है। इस कारण स्वामिनारायण भगवानने अपने नियंत्रण में लेकर

अहमदाबाद में सर्व प्रथम सम्प्रदाय का पहला मंदिर बनाकर नरनारायण की स्थापना किये थे . और भूज नगर में श्री नरनारायणदेव की स्थापना की गई । और बोले इस श्री नरनारायण को हमारा स्वरुप समझे अति आग्रह करके सबसे पहले श्री नगर में स्थापना किये । इन दोनो के बीच भेद मत समाझीयेगा । वे ही ब्रह्मधाम के निवासी है ।(उम.-६) इस नरनारायणदेव का जो लोग दर्शन करेगे । उसे बद्रीश्रआश्रम का फल मिलेगे । प्रतिदिन जो दर्शन करेगा । ुसे मोक्ष में रुकावट नही आयेगी । इस मंदिर में जो जप करेगा । तपस्या करेगा । पूजा-पाठ करेगा । पाटोत्सव करायेगा । उसके मनोरथ पूर्ण होगे । इस मंदिर में जो कोई दान, भेट, धर्मादा देगा उसके मनवांछित संकल्प श्री नरनारायणदेव पूरा करेगे ही ।

स्वर्ग में प्रतिदिन देवता लोग श्री नरनारायणधेव के दर्शन हेतु आते है । श्रीजी महाराज के कथनानुसार देश-परदेश में रहने वाले भक्तलोग यदि एकादशी के दिन पर यहाँ का दर्शन करेगे तो उन्हे प्रतिदिन दर्शन का फल प्राप्त होगा । प्रत्येक महीने दूर देश के भक्त यदि नही आ सके परंतु श्री नरनारायणदेव की स्तापना के पाटोत्सव का दर्शन कर ले तो उन्हे पूरा वर्ष का फल प्राप्त होता है ।

अनु. पेईज नं. ७ से आगे

स्वरुप में इतनी शक्ति है कि आपने कामदेव के गर्व को नाश कर दिया । ऐसे धर्म देव के पुत्र रुप में प्रगट होकर साक्षात् परमात्मा श्रीकृष्ण आप के चरणो की मैं साष्टांग प्रणाम करता हूँ ।(४)

स्वभक्तसत्पद्मविराजमानं वृन्दावनाकोड सुशोभमानम् ।
स्वानां हरन्तं हृदयानि दृष्ट्या वन्दे हरिं धर्मसुतं चं कृष्णम् ॥५॥

अपने आश्रित प्रेमी भक्तो को साधारण मिट्टी के घर में साक्षात् अनंतकोटी ब्रह्माधिश्वर सर्वावतारी आप प्रत्यक्ष मनुष्याकृति धारण करके विराजमान है । उसी रुप में वृंदावन में तेजोमय रुप में व्रजवासी गोपियो के साथ रासक्रिडा करते शोभा बढाते है । जब अपने भक्तो के उपर द्रष्टि करते हो तो उनके हृदय मन में अपने रुप को रख देते है । ऐसे धर्मदेव के पुत्र रुप में प्रगट साक्षात् परमात्मा श्रीकृष्ण आप के चरणो की मैं साष्टांग वंदना करता हूँ । (५)

शिर: पटापीडनिजात्मलोभं मयूरपत्रालिकिरीटशोभम् ।
पद्मादिलक्ष्मांकित पादयुग्मं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥६॥

यहाँ पर मनुष्य रुप धारण करके सिर पर सुंदर मुकुट धारण करके भक्तो के मन को लुभादेते हो ।और वृज में मोर के बंख वाला मोर मुकुट धारण करके अधिक शोभायमान लगते हो । आप के दोनो रुपो में कमल इत्यादि सोलह चिन्ह से युक्त युगल चरणारविंद शोभित है । ऐसे धर्म देव के पुत्र रुप में प्रगट हुए शाक्षात् परमात्मा श्रीकृष्ण आपके चरणो का मैं साष्टांग वंदन करता हूँ । (६)

स्वदत्तभूषा: सहसा ददानं स्वांङ्गेषु भूषा विविधा दधानम् ।
सकालमायाभयदाभिधानं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥७॥

प्रत्यक्ष रुप में बिरामजान होकर अपने भक्तो द्वारा अर्पित बहु मुल्य वस्त्रो और स्वर्णाभू,णो को आवश्यक व्यक्ति को दे देते है । वृंदावन में अनेक प्रकार के वस्त्र-आभूषण स्वयं धारण करके भक्तो को अलौकिक दर्शन देते हो । दर्शन करने वाले की जन्म-मृत्यु के भय से मुक्त कर देते हो । ऐसे धर्मदेव के पुत्र रुप में प्रगट होकर साक्षात् परमात्मा श्रीकृष्ण आप के चरणो की मैं साष्टांग वंदनक रताहूँ ।(७)

भक्तान्तरारिक्षपणप्रतापं गोगोपगोपीरिपुदैत्यतापम् ।
पादानमत्स्वीयजनैकबन्धुं वन्दे हरिं धर्मसुतं च कृष्णम् ॥८॥

आप के प्रत्यक्ष मनुष्याकृति रुप का दर्शन जो आश्रित करता है । उसके हृदय से काम, क्रोध, मदलोभ शत्रुओ का नाश हो जाता है । ऐसा आप का प्रताप है । उसी प्रकार गाय और गोपालो के शत्रु कंस का नाश करते हो । जो आप के शरण में आकर आपकी वंदना करता है । उसके हितैषी बन जाते हो । ऐसे धर्मदेव के पुत्र के रुप में प्रगट साक्षात् परमात्मा श्रीकृष्ण मैं आप के चरणो की साष्टांग वंदना करता हूँ ।

भगवान जैसा रखे - वैसे रहे

– गंगारामभाई एम. पटेल (प्रांतिज)

हमारे जीवन में सुख आता है तो अच्छा लगता है। लेकिन दुःख आना अच्छा नही लगता है। इस अवस्था में तुरंत भगवान के खिलाफ बोलने लगते है। भगवान होकर ऐसा क्यो करते है ? लेकिन कुछ समय के बाद उसका परिणाम जब ज्ञात हो जाता है। तब लगता है कि भगवान जो कुछ भी करते हैं। हमारी अच्छाई के लिये करते है। श्री स्वामिनारायण भगवान हमे जिस अवस्था में रखें। उसमें खुश रहना चाहिए।

एकबार स्वामिनारायण भगवान मूलजी ब्रह्मचारी के साथ एक गाँव से दूसरे गाँव में पैदल जा रहे थे। उसी रास्ते से एक गाडीवाला जा रहा था। वह बारात लेकर जा रहा था। मूलजी ब्रह्मचारीजी गाडीवाले से आग्रह किये। यदि आप की गाडी में थोडी जगह हो तो हमे गाडी में बैठा लै। भगवान आप का अच्छा करेगे।

गाडीवाले को दया आयी। इस कारण से वह श्री स्वामिनारायण भगवान और मूलजी ब्रह्मचारी को गाडी में बैठा लिया। गाडी आगे प्रस्थान की दोपहर का समय हो गया था। इस लिये सभी लोग भोजन करने के लिये एक जगह रुक गये। भोजन करने के बाद चल दिये। कुछ देर बाद पता चला कि गाडी में गहनो का डिब्बा गायब हो गया है।

सभी लोग डिब्बे को खोजने लगे। तभी भगवानवाले बोले कि इसी गाडी वाले ने लिया है। सभी बाराती एकजुट होकर गाडी वाले को मारने लगे। डिब्बा ईधर-उधर हो जाने के कारण बाराती उसे प्राप्त कर लिये। अन्ततः गहने का डिब्बा मिल गया।

मूलजी ब्रह्मचीर ने तुरंत भघवान से बोले आप ऐसा काम करते है ? बेचारा गाडी वाला दया करके गाडी में बैठाया। आपने उसे बिना कारण के मार खिलवा दी।

भगवानने उत्तर दिया कि आप को ज्ञात नही है। इस गाडीवाले का बारातियो से सात जन्म से बैर चला आ रहा था। हमने माहौल बनाकर गाडीवाले को पिटवाया है। अब उसे सात जन्म तक परेशान नही होना होगा। गाडीवालेने हमारी सेवा किया। इसलिये उसे फल तो देना पडेगा। उसे समझ में जायेगा ना आये।

वैसे भगवान जो हमारे लिये करते है। वह हमारे हित में ही होता है। लेकिन हमें ज्ञात नही होता है। हम भगवान को दोष देते है। में भगवान की इतनी भक्ति करता हूँ। माला फेरता हूँ। फिर भी भगवान हमें क्यो दुःख देते है ? भगवान जो कुछ भी करते है। हमारे अच्छाई के लिये करते है। इस लिये ''भगवान जैसे रखे वैसे रहे। जैसा दिखाये वैसा ही देखे।''

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर को १९९ वर्ष पूरा हो चुका है। आने वाले वर्ष में २०० साल का उत्सव पर्व उल्लास पूर्वक मनाया जायेगा।

आज से २०० वर्ष पहले स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा स्वयं श्रीजी महाराज अपने करकमलो द्वारा किये थे। वर्तमान समय में जहाँ पर नरनारायणदेव की मूर्ति प्रतिष्ठित है। उस जगह पर नीचे एक कुँवा है। एक रुम भी है। इसके साथ खिडकी रोशनदान भी है। गर्मी के समय में वहाँ से शीतल हवा आती है। श्रीजी महाराज इसी कमरे में आराम करते थे। ये शीतल हवा उन्हे अच्छी लगती थी। इस प्रसादी के खिडकी - रोशनदान हाल नं. १ में दर्शनार्थी के लिये रखा गया था।

कोरोना काल के बाद अपना म्यूजियम आगामी फागुन सुद-३ तारीख १६ मार्च अपने म्युजियम का १० वाँ स्थापना दिन है। प्रत्येक वर्ष ठाकुरजी का अभिषेक तथा समूह महापूजा द्वारा १- स्थापना दिन मनाया जायेगा।

- प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री यज्ञ पूजन - फरवरी-२०२१

दि. ०७-०२-२०२१	श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग समाज गांधीनगर (से.-२) प्रेरणा महंतश्री नाना पी.पी. स्वामी ।
दि. १२-०२-२०२१	प.भ. निकुलभाई डाह्याभाई चौधरी - बालवा ।
दि. १४-०२-२०२१	प.भ. दक्षाबेन संजयभाई सोनी सेटेलाईट - ह. अर्जुन संजयभाई सोनी ।
दि. २३-०२-२०२१	प.भ. विक्रमभाई जयंतीभाई पाटडिया - न्यु राणीप ।
दि. २४-०२-२०२१	सांख्ययोगी मरधाबा - श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिपर - ध्रांगध्रा ।
दि. २५-०२-२०२१	प.भ. रमेशभाई ईश्वरभाई भावसार - सेटेलाईट - चि. घनश्याम की शादी के अवसर पर ।
दि. २७-०२-२०२१	प.भ. रणछोडभाई करसनभाई परमार - नरोडा (बलोल-भाल) - प्रेरणा पू. बलदेव स्वामी तथा पू. हरजीवन स्वामी
दि. २८-०२-२०२१	प.भ. कोकिलाबेन विठ्ठलभाई भावसार - न्यू राणीप

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि-फरवरी-२०२१

रु. १,००,०००/-	प.भ. विठ्ठलभाई शिवरामदास पटेल - रिद्रोलवाले वर्त. अहमदाबाद ।
रु. ५१,०००/-	गं.स्व. कानबाई करशन वरसाणी - ह. प.भ. कानजी करशन वरसाणी - सामत्रा (कच्छ)
रु. ५१,०००/-	प.भ. भीमजी मावजी भूडिया परिवार ।
रु. ५१,०००/-	प.भ. हीरजी मावजी भूडिया परिवार ।
रु. ५१,०००/-	प.भ. मनसुख मावजी भूडिया परिवार भुज (कच्छ)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम १० वाँ स्थापना दिन का कार्यक्रम

समूह महापूजा

समय दोपहर : ३-०० से ६-३० बजे

सत्संग सभा तथा दाताओ का सन्मान और आशीर्वाद

समय शायं : ५-३० से ६-३० तक

भोजन प्रसाद शायं : ६-३० पर

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सावधान रहना

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

एकराजा अपने राज्य के निवासियो के रहन–सहन को जानने के लिये निकलना चाहते थे । दिवान से बोले प्रजा का सुख–दुःख कैसा है । उसे हम लोग वेष बदल कर देखने चलते है । राजा और दिवान दो लोग घोडे पर बैठकर निलकते है । प्रजा के जीवन का अवलोकन करते जा रहे थे । बात करते–करते दूर निकल गये । दोनो लोग अलग हो गये । इस प्रकार राजा दूर चले गये । राजा अकेले थे । उन्हे प्यास लग गई थी । पानी को खोजते है । लेकिन पानी दिखाई नही दे रहा था । राजा को एक किसान दिखाई दिया । राजने सोचा कि किसान के पास जल होगा ।

राजा को प्यास मिटाने के लिये पानी आवश्यक है । दूसरी तरफ किसान सोचा कि कोई शिकारी आ रहा है । या प्यास लगी हो तो हथियार के साथ आ रहा है । राजा किसान के पास आ जाते है । और बोले मुझे अधिक प्यास लगी है । मुझे पानी पिलाये । किसान को विश्वास हो गया । ये तो शिकारी ही लगता है । उसने सोचा कि मैं दे दूँगा तो इसके बाद वह पाप करेगा । वह किसान को पानी नहीं दिया । राजा मटकी पास गये । इतने में किसान लकडी से मटका फोड दिया ।

राजा विचार करते है । यह तो हमारे राज्य की सीमा में है । तो क्यो पानी क्यो नही पिलाया राजा को शक हो गया कि यहाँ की प्रजा को कष्ट है । इस किसान को अवश्य कष्ट होगा । राजा घोडा पर बैठकर वापस आ गये । राजमहल में आखर शांति पूर्वक पानी पीये ।

राजा को जानने की ईच्छा हुई कि किस कारण से किसान ने पानी नही पिलाया था । राजाने सैनिको को किसान के पास भेजे । और उसे राजदरबार में लाने का आदेश दिये । किसान सोचा कि मैंने तो कोई गुनाह नही कया है । खेती का द्रशांत तो राजा को दे दिये है । मुझे राजा क्यो बुला रहे है । सिपाही ने कहा, जल्दी आओ । सिपाही के डर से वह जाने के लिये तैयार हो गया ।

महाराज के पास किसान को लाया गया । किसान तुरंत समझ गया । ये तो कल वाले आदमी है । राजाने कहा कल मैं तुम्हारे पास आया ता । मुजे प्यास लगी थी । तुमने क्यो पानी नही पिलाया । तुम्हे मालूम है । मुझे व्यास के कारण चक्कर आ रहा था । पानी की अधिक आवश्यकता थी । फिर भी आपने पानी नही पिलाया । ऐसा क्यो किया ? तब किसान बोला, मुझे क्षमा करियेगा । मैं समझा कि आप शिकारी है । आप को पानी पिला देगे तो बाद में आप पाप करेगे । राजने कहा हमारे पास बंदूक थी । क्या उससे तुम्हे भय नही लगा । डर किसका ? मैंने प्रतिज्ञा कर लिया था कि दुर्जन को पानी नही पिलाना है । मैं अपने संकल्प पर स्थिर रहा । इस लिये पानी के मटके को मैने फोड दिया ।

किसान की बात सुनकर राजा बोले कि तुमने अपने प्रतिज्ञा का पालन किया । मैने तो यह संकल्प लिया था कि पानी पीने के बाद किासन को एक गाँव का जमीदार बना दूँगा । ठीक है तुमने पानी नही पिलाया लेकिन तुम्हारा संकल्प अच्छा था । इस शुद्ध संकल्प के कारण मैं तुम्हे एक गाँव पुरस्कार में देता हूँ । पानी नही पिलाने के बाद भी एक गाँव का कृषक राजा बन गया ।

बाद में एक समस्या आयी । राजा के यहाँ कोई

प्रसंग हो । राजकुमार का जन्म हो । तो सभी छोटे-बडे राजा इकट्ठे होते थे। पुरष्कार, सौगात लाते थे । इस सभी कार्यक्रम के लिये राजा के कार्यालय के पास एक रुकने का स्थल था । वहाँ पर राजा लोग बैठकर आपस में बात करते थे । नये राजा बने किसान भी वहाँ पर आये थे । सभी लोग बैठे-बैठे बात कर रहे थे । किसी राजाने पूछा, आप की यो पाँच गाँव कैसे मिले ते ? तब वह बोला युद्ध के समय महाराज की सहायता किया था । दूसरे से पूछा आपको कैसे गाँव मिला ? एक बार राजा का घोडा बिमार हो गया था । मैने अपना घोडा राजा को दिया था । इस कारण से मुझे ये गाँव मिले थे । दीसरा बोला हमारे पिताजी वैद्य थे । रोग का निवारण करने के कारण उन्हें दो गाँव मिला था । इस प्रकार किसान का भी क्रम आया उससे पूछा गया आप को गाँव क्यो मिला ? किसान शर्म से नीचे देखने लगा । शरम से बोला कि मुझे राजा को पानी नही पिलाने के कारण ये गाँव मिले है ।

मित्रो ! यह बात तो यहाँ समाप्त हो गयी । लेकिन विचार करना है । भगवान धरती पर आकर मानव कल्याण करते है ? भगवान का संकल्प है ''जिसे मोक्ष चाहिए वह धर्मवंशी के द्वार पर आये । भगवान का संकल्प है कि मेरे आश्रित अन्न-जल से दु)खी न रहे । ''हमारे भक्तो को अंत समय हम ले आये भगवान संकल्प पूरा करे ताकि हमे नीचे देखना नही पडे । इस लिये भजन, भक्ति, सत्संग, सेवा कर लेना चाहिए । इस कारण से हम लोगो को भगवान के दरबार में नजर नीचे नही करना पडेगा ।

●

सेवा चार प्रकार की

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

अरे बच्चो आज प्रातः प्रातः हमारे पास क्यो आ गये ? प्रातः दादाजी के पास आकर मन, दिव्य और सरला दादाजी से पूछते है कि कल हम सभी मंदिर पर गये थे । तभी कथा में सुने थे कि ''सेवा हि परमोधर्म'' तो सेवा क्या है ? हम सभी को बताये । दादाजी अति प्रसन्न हुए । और बोले – आज रविवार है । इस बात को अच्छे से समझाउगा ।

बच्चो सुनो, जो कार्य परोपकार की भावना से, भक्ति की भावना से विना किसी स्वार्थ की जाती है । उसे सेवा कहते है । सेवा भी कई प्रकार की होती है । सेवा चार प्रकार के ''क'' से होती है । (१) काया से (२) कोथली से (३) कलम से (४) कंठ से इन चारो को मैं आप सबी को विस्तारपूर्वक समझाता हूँ । आप की सुनना है ? सभीने हाँ कहा – नई बात को समझने जानने में अधिक आनन्द मिलता है ।

काया (शरीर) से सेवा : हम मंदिर जाते है । तब हाथ में झाडू लेकर सफाई करते है । बर्तन धो देते है । फूल-हार बना देते है । यह शरीर से सेवा कही जाती है । मुक्तानंद स्वामीने कीर्तन मे गाया है कि ''नीची टेल मळे तो माने भाग्य जो'' रोगी को अस्पताल में ले जाना । वृद्ध को नहलाना, माता-पिता की सहायता करना, संत और शास्त्र शारीरिक सेवा को उत्तम मानते है । इस सेवा से पर्वत जैसा पाप नष्ट हो जाता है । जीव का कल्याण हो जाता है ।

कोथली से सेवा : कोई शुभ कार्य हो, मंदिर निर्माण हो यज्ञ कार्य हो, विद्यार्थी की पढाई में सहयोग, रोगी की आर्थिक सहायता इन सब बातो पर धन का सहयोग ही कोथली सहायता कही जाती है । किसी कार्य को करने के लिये धन की आवश्यकता पडती है । जिसके पास सहुलियत हो उस व्यक्ति को इन कार्यो के लियए धन सहयोग करना चाहिए । इससे घर में सात्विक लक्ष्मी का निवास होता है । जिससे व्यक्ति सुखी रहता है ।

कलम से सेवा : भगवान के लीलाचरित्र या

सद्उपदेश से अच्छा पढने से मनुष्य में अच्छे संस्कार आते है । इसके लिये पुस्तक, सामयिक, की आवश्यकता पडती है । जो विद्वान इन लेखो को पुस्तक के रुप में लिखते है । वह उनकी कलम की सेवा है । यह समाज के लिये उपयोगी होता है । अच्छी पुस्तको, का वाचन, समाज के निर्माण में सहयोग देता है । इसके लिये कलम की सेवा उत्तम कही जाती है । अपने संतो ने कीर्तन और शास्त्र की रचना किये । इस कारण से भगवान की सरलता से भज सकते है । यदि संत-ऋषि महर्षि अपने ज्ञान की पुस्तक स्वरुप नही दिये रहते तो हम लोग कैसे पढ पाते । इस कारण कलम से की गई सेवा अच्छी होती है । हमे जीवन में प्रतिदिन अच्छे साहित्य का अध्ययन करना चाहिए । पढकर आप कलम की सेवा दे सकते हो ।

कंठ से सेवा : भगवान का कीर्तन करना चाहिए । भगवान की कथा-वार्ता को पढकर ज्ञानोपदेश देना यह कंठ की सेवा है । शास्त्र को समझाने के बाद अच्छे से समझ में आ जाता है । जिस प्रकार शिक्षक तुमको पुस्तक में से समझाता है । और भाव समझ जाते हो । भगवान के लीलाचरित्र को हृदय में रखकर उनकी कथा-वार्ता करना कंठ की सेवा है । अपने आराध्य देव श्री स्वामिनारायण भगवान इस प्रकार कंठ की सेवा देनेवाले को सदैव अपने पास रखते है । एक बात कह रहा हूँ । स्वामिनारायण भगवान सद्गुरु श्री नित्यानदं स्वामी, सद्गुरु श्री वासुदेवानंदजी ब्रह्मचारी तथा प्रागजी पुराणी को स्थायी तौर पर अपने साथ रखते थे। तता उन लोगो से प्रतिदिन कथा-वार्ता सुनते थे । हमे भी प्रतिदिन मंदिर जाकर कथा-वार्ता सुनना चाहिए । अच्छे संस्कारो की वृद्धि होती है ।

बच्चो ! अब तो पता चल गया होगा, सेवा अर्थात् क्या ? दादाजी आप ने तो अति सरलता से समझा दिया । हमे अधिक आनंद मिला । अब हम लोग भी सेवा देगे ।

मित्रो ! इन बच्चो की तरह आप भी सेवा करने की आदत रखे । भगवान की कृपा बनी रहेगी । अपने आराध्य देव स्वामिनारायण भगवानने गढडा मध्य प्रकरण के २५ (पच्चीस वे) वचनामृत में सेवा करने वाली की बडी उपलब्धइ की बात कही है । भगवान की परावाणी में ''जैसे उका खाचर को संत सेवा का व्यसन हो गया था । उसी प्रकार भगवान तथा उनके संत उनकी सेवा का व्यसन होना चाहिए । इसके अलावा एक क्षण भी नही रह सके । तो अन्तःकरण से मलिन वासना मिट जाती है । इतनी बड़ी जिसकी उपलब्धिहै । यह ''सवा'' यथा शक्ति होती है । उसके लिये हमेशा तैयार रहेगे । इससे भगवान तथा संत पुरुषो की कृपा बनी रहेगी ।

श्री स्वामिनारायण अंक के सदस्यो हेतु सूचना

श्री स्वामिनारायण मासिक सदस्यो को सूचित किया जाता है । आप को प्रत्येक महीने के ११ तारीख को नियमित और ध्यानपूर्वक अंक को डाक द्वारा भेज देते है । फिर भी कुछ लोग अंक नही पाते उसकी शिकायत मिलती है ।इसके लिये आप अपने डाकधर में लिखित शिकायत अवश्य करे । जिससे समयपर एवम् नियमित मिले । यदि अंक स्टाक में होगा तो पुनः अंक भेज दिया जायेगा । आप सदस्यता क्रमांक के साथ हमें अवगहत कराये ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की ओफिस नंबर

Mo. No. : 82380 01666

WhatSapp No. : 99099 67104

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "श्री स्वामिनारायण महामंत्र प्रागट्य दिन"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

भगवानने अपने मुंह से आज के दिन फणेणी में स.गु. श्री रामानंद स्वामी धाम में जाने के बाद चौदह दिन के बाद संवत १८५८ माघसर वदी सफला एकादशी के दिन सभा में स्वामिनारायण महामंत्र दिये थे ।

स.गु. श्री रामानंद स्वामी के धर्मध्वजा धारण करने वाले सहजानंद स्वामी सभा को सम्बोधित करते हुए बोलते है । हे भक्तजनो ! आज तक आप अळग अलग नाम से भजन किये है । अब मैं एक मंत्र दे रहा हूँ । अब से इस मंत्र का जाप करना है । यह ऐतिहासिक वर्णन हरिलीलामृत में लिखा गया है।

चौदमांथी नवी रीत करी, सौना अंतरमाही उतरी....

यहाँ पर मन में प्रश्न सहजता से उठता है । ''नयी विधिक्या है ? क्या इससे पहले भगवान का 'भजन' नही होता था । होता था तो कैसे ? तो 'राम', 'कृष्ण', 'गोविंद' इस प्रकार सम्प्रदाय में लोग भजन करते थे । सहजानंद स्वामी बोले हमारे अनेक नाम है । कोई नाम संत ने रख दिया । कोई नाम भक्तोने रखा । पृथ्वी पर जन्म धारण करने के कारण हमारा नाम माता-पिताजीने भी रखा । आप उस नाम से भी हमारी भजन करते रहे है । लेकिन मैं आज अपना नाम रख रहा हूँ । ये सर्वोपरि मंत्र है । भगवानने स्वामिनारयण ऐसा मंत्र दिये ।

हवे आज कहु हूं प्रकाश मते सांभलो ते सहुदास
स्वामिनारायण मारुं नाम, संभारता सौने सुखधाम
बीजानाम ले कोई अपार, तोय आवे नहि एनी हार

इस प्रकार भगवान स्वामिनारायण के मुख से सर्वप्रथम नाम सुनकर सभी लोग आनंदित हुए । जयघोष के साथ सभी संतो-भक्तोने स्वागत किया । सम्पूर्ण ब्रह्मांड में 'स्वामिनारायण' महामंत्र गूज उठा । कलियुग में नाम के स्मरण का महत्व है।

भगवान वेदव्यासने भी श्रीमद् भागवत में बनाये है कि सतयुग में विष्णु भगवान की पूजा करने से त्रेतायुग में सभी प्रकार के यज्ञ करने से द्वापर में सेवा करने से जो फल प्राप्त होता है । वह फल कलियुग में मात्र भगवान के नाम स्मरण से मिलता है।

संत तुलसीदासजीने भी रामचरित्र मानस में लिखे है कि पूजा-अर्चना, योग से जो फल मिलता है । वही फल कलियुग में भगवान के नाम स्मरण से मिलता है । तो स.गु. श्री रामानंद स्वामी धाममें गये तब लोग अलग-अलग नाम से जाप करते थे । इस कारण से महाराज ने निर्णय लिया कि हम सब एक नाम का ही स्मरण करे । यह सोचकर महाराजने स्वामिनारायण महामंत्र स्वयं बताये थए । और बोले ये सर्वोपरि मंत्र है । स्वामिनारायण अर्थआत् सभी 'लक्ष्मीनारायण, नरनारायण, वासुदेवनारायण, सभी नारायण के स्वामी अर्थात् सर्वोपरि कहे जाते है । जप करते समय श्रद्धा और निष्ठा से जप करना चाहिए । एक-एक मणका के साथ मूर्ति को चित्त में रखकर भगवान का नाम लेना चाहिए ।

कितना बड़ा पापी क्यो न हो । सच्चे दिल से नाम लेने पर उसके पाप का नाश हो जाता है । लेकिन जम अन्तर से करना पडता है । हम सब का भगवान के प्रति लगाव तो है ही इस लिये छोटी चोट लगने पर भी स्वामिनारायण.... स्वामिनारायण.... अंतर से निकल जाता है।

हमें यह लगाव जीवन में स्थायी तौर पर रखना है । कुछ लोग दुःख आने पर भगवान की याद करते है । बाद में सब बराबर हो जाता है । अपने मौज-मस्ती में आ जाता है । ऐसा नही करना चाहिए । कुछ दवा और इन्जेक्शन जब तक उसमें ताकत होती है तभी तक आराम देते है । बाद में फिर कष्ट आ जाता है । कुछ लोग रोग की शरीर में आने नही देते है । ऐसी सावधानी वे लोग रखते है । भगवान के मंत्र जाप से लगातार व्यक्ति जागृत रहता है । और अंतर मन से भगवान के साथ जुडे रहते है । लगातार ध्यान करने से सांसारिक

विषमता व्यक्ति मे नही आती है। प्रारम्भ में थोडा अटपटा लगता है। जैसे छोटे बच्चे शुरु में स्कूल नही जाना चाहिते है। लेकिन धीरे-धीरे भेजना पडता है। प्रतिदिन आने-जाने से बच्चे की आदत बन जाती है। अवकाश दंखने को कहे तो बच्चा मना कर देता है। क्यो मन से दृढ हो जाता है। कि मुझे लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार महिमा के साथ भजन करता है। सर्वोपरि का भाव आजाने से सभी संकट अपने आप दूर हो जाता है।

•

"स्वामिनारायण महामंत्र"

- सांख्ययोगी कोकिला (सुरेन्द्रनगर)

ये घनघोर कलियुग है। कलियुग में मानव जन्म सार्थक करने के लिये महामारी रोग से बचने के लिये कल्याणकारी साधन है। जैसे कि तप, व्रत, दान, यज्ञ, जप, आदि कल्याण कारी साधन है। इन सब साधनो से अच्छा ''स्वामिनारायण महामंत्र'' सुख दायी है। संसार से तारने वाला है। रोग से मुक्त करने वाला है। जन्म-मरण से छुटकारा देता है। नाम लेने के लिये कोई नियम-विधिनही है। कोई मेहनत और खर्चा भी नही है। स्वामिनारायण नाम बालक, युवक, वृद्ध उच्च, निम्न, स्त्री-पुरुष बिमार व्यक्ति कर सकता है। जप करने से मन शुद्द होता है। माया का नाश होता है। माया का नाश होने से हृदय में भगवान अखंड बने रहें। मनोमंदिर पवित्र बनेगा। तब जीव का मोक्ष हो जाता है। सतयुग में ध्यान करने से, त्रेता युग में यज्ञ करने से, द्वापर में सेवा करने से फल मिलता है। वही फल कलियुग में भगवान के नाम स्मरण से मिलता है। भगवान ने नारद को अपने मुँह से कहे है कि ''मैं वैकुंठ में नही रहता हूँ।'' योगियों के हृदय में नही रहता हूँ। लेकिन भक्त जहाँ भी मेरा नाम लेते है। वहाँ पर मैं रहता हूँ। इसलिये स्वामिनारायण महामंत्र चलते फिरते शुद्ध मन से जप करना चाहिए। जो जप करेगा। वह सुखी रहेगा। उसके अनेक जन्मो के पाप नष्ट हो जाते है। (१) जो स्वामिनारायण नाम लेता है उसके सभी पाप मिट जाते है। (२) मेरा नाम श्रुति में सर्वोपरि माना जाता है।

इस प्रकार भगवान के बल से पातकी, रोगी, दुःखी, ये सब कष्ट दूर हो जातेहै। रामनाम के लेने से हनुमानजी सागर पार करके लंका पहुँच गये थे। श्रीहरि के नाम से गजेन्द्र मगर के मुख सेबाहर किये थे। प्रभु के नाम से बिल्ली के बच्चे जो कुम्भार के आँव में रखे थे बच गये। 'स्वामिनारायण' मंत्र में इतनी शक्ति है।

भगवान श्रीकृष्ण गीता में कहते है। अंत समय में जो मेरा नाम लेगा। वह मुझे प्राप्त होगा। उसमें संशय नही है। इसलिये उठते-बैठते हमेशा जप करे। श्रीजी महाराज ने गढडा प्रथम के २३ वे वचनामृत में कहे है। कलियुग में नाम स्मरण सबसे अच्छा है। कहा जाता है। ''कलियुग केवल नाम अधारा, सुमिर नर उतरहि पारा'' शक्कर की तरह मुह मे जाने के बाद मिठास लाती है। जप का स्वभाव भी यही है। इसका उच्चारण सभी लोग अच्छे से करते है। नाम के जप से कई लोगो का उद्धार हुआ है।

नारायण के नाम से अजामिल तर गये थे। बालियो लुटेरा वाल्मिकी बने। जनबाई गोबर थापते-थापते कल्याण को प्राप्त की थी। दूसरे शास्त्र भी कहते है ॥ कलियुगे हरि कीर्तनम् ॥ कलियुग में भगवान के नाम का स्मरण श्रे,ठ और फलदायी होता है। यह कोई भी व्यक्ति कर सकता है। इस मंत्र के विषय में श्रीहरि कहते है कि ''भावे-कुभावे जो कोई भी मेरा नाम लेगा। वह सभी पापो से मुक्त हो जायेगा। सिंह के भय से जैसे बकरी घास नही खाती है। वैसे नाम स्मरण से पाप नष्ट हो जाता है। श्रीजी महाराज कहते है। ''कितना बडा पापी हो अंत समय स्वामिनारायण का नाम उच्चारण कर ले। तो सभी पापो से मुक्त हो जाता है। तथा ब्रह्मलोक का अधिकारी हो जाता है।

"सुखदायक रे स्वामी सहजानंद
प्रगट पुरुषोत्तम श्रीहरि
जेनुं स्वामिनारायण नाम छे,
जेने भजने रे पामे भवजल पार
स्वामिनारायण मुखे उच्चरे
तेने जन्म-मरण जमनो भय जाय।

निष्कुलानंद स्वामीने नाम का वर्णन किया है।

स्वामिनारायण नाम वहालु लागे,
स्वामिनारायण नाम
रात-दिवस मारा रुदिया भीतर
जपीश आठो जाम वहालुं
भवजल तरवा पार उतरवा
ठरवानुं छे मारे टा बालुं
सर्वोपरी श्याम छे नरवीर नाम,
सुंदर सुखडानुं धाम रे वहालुं

फिर निष्कुलानंद नाम की महिमा कहते है।

स्वामिनारायण नाम ने तुल्यनावे रे
जप, तप, तीरथ, व्रत कावे रे
एवो नामतणो महिमाय रे,
भजता भवदुख: पलाय रे

सत्य निष्कुलानंद तेने गाय
स्वामिनारायण नाम ने

इस प्रकार प्रेमानंद, ब्रह्मानंद, भूमानंद आदि संतोने नाम की महिमा का वर्णन किये है । समय निकालकर भगवान के नाम का जप करे । भजन जीवन का सार है । जप के व्यसन से परम सुख मिलता है । भगावन के साथ रिश्ते बनाने में नाम जप सर्वोत्तम है ।

नाम स्मरण में भगवान की यादवनी बनी रहे । यह जरुरी है । निष्काम भाव से नाम का स्मरण करने से फल उच्छआ मिलता है । नीचे के पद महिमा पूर्वक गाना चाहिए ।

"मारे स्वामिनारायण भजवा छे
दुरिजनिया संगने तजवा
मे तो मेल्यो संसारीडो माडी
जेवो स्वामिनारायण छाडी
मने स्वामिनारायण भावे
लोक स्वामिनी कहीने बोलावे,
वारे घाटे ने जोता वलतां,
स्वामिनारायण श्रवणे सांभळता
मुखे स्वामिनारायण गाऊ
लोक लाज थकी न लजाऊ..मारे

स्वामिनारायण मंत्र जाप से धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारो पुरुषार्थ की सिद्धी मिलती है । किसी मंत्र का अनुष्ठान करके नियमित जप करना पडता है । उसका दशांश हवन करना पडता है । तब एक अनुष्ठान पूर्ण माना जाता है । स्वयं मंत्र को पसंद करके उसे पूर्ण करते रहना चाहिए । मंत्र को बदलना नही चाहिए । मंत्राक्षर में तोड-मरोड नही करना चाहिए ।

एकबार किसी श्रद्धालु बतन की किसी महात्माने मंत्र दिया । जो ॐ नमो भगवते वासुदेवायं और बोले इस मंत्र का नियमित जाप करना । इससे आप का कल्याण होगा । बहन नियमित जप करने लगी । एक दिन कुए पर पानी भरने गई । वहाँ पर एक बहन बोली कि आप मुह में क्या बोल रही हो । मैं मंत्र जाप कर रही हूँ । सहेली ने कहा अपने मुख से पति का नाम नही लेना चाहिए । मंत्र में तो तुम्हारे पति का नाम है । भोली स्त्री सखी के सलाह से मंत्र में सुधार कर दिया । ॐ नमो भगवते बावला ना बापा'' इससे इच्छित परिणाम मिलेगा क्या ? इस लिये स्वामिनारायण मंत्र में बदलाव न करे । स्वामि और नारायण अलग है । ऐसा अर्थ नही करे । इससे फल अच्छी नही मिलेगा । ये मंत्र स्वयं श्रीहरि ने दिया है । इसलिये स्वामिनारायण महामंत्र का जप करना चाहिए । जिससे महामारी दूर होगी ।

•

'जितना भगवान से दूर होगे, उतना सुख कम मिलेगा'

– पटेल लाभुबेन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

निर्वासनिक होने पर ही अक्षरधाम की प्राप्ति होती है । अपने दोष को निमूल करे । शुद्ध बने । छोटा छेद जहाज को डूबो देता है । उसी प्रकार वासना, ममता और महो अमुष्य को डूबा देती है । भगवान के ध्यान-स्मरण से शरीर में व्याप्त वासना समाप्त हो जाती है । प्रभु कमल के पंखुडी के समान है जो चित्त को चुरा लेते है ।

"नेणे वरसे अमृत अविनाश,
करेपान नित्य निजदास
निरखी नेणां तृप्त न थाय
तेमणे कल्प पलक समझाय"

मूर्ति के सामने प्रत्यक्ष भाव लेकर दर्शन करते है । उसकी आँख का पानी घुल जाता है । भगवान चंदन का वाघा पहने है । उसका दर्शन करके हृदय में बसाये । प्रभु के हस्त कमल में सोना का कडा तथा अंगूढी पहनी है । प्रभु के रुप को देखकर कामदेव शरमा जाते है । ऐसी शोभा वाले श्रीहरि के । प्रभु फूलो के श्रृंगार से सजे है । चम्पा, चमेली, मोगरा, गुलाब, गुलदावडी, सेवंती जैसे पुष्पो से सजे धजे है । ज्ञ्न से ध्यान श्रेष्ठ है । ध्यान करने से शीघ्र माया से मुक्त हो जाते है ।

वृक्ष को पानी चाहिए । शरीर को भोजन चाहिए । जीवात्मा को भगवान के ध्यान की आवश्यकता है । पानी के बिना वृक्ष शुष्क हो जाता है । अन्न, जल के विना शरीर कमजोर हो जाती है । इसी प्रकार भक्ति विना जीवात्मा भी शुष्क हो जाती है ।

पंचाल के पहले वचनामृत में श्रीजी महाराज कहे है । जैसे ये मशाल जलती है । तो मशाल के पास प्रकाश होता है । सम्पूर्ण सुख तो भगवान के पास है ।

एख बात अवश्य समझना पडेगा । जिसे भगवान की भजन करना हो, जीव का कल्याण करना हो । उसे नीद-आलस कम कर देना चाहिए । कई जन्मो के बाद यह कार्य हो सकता है । ऐशी भक्ति का कार्य लेकर बैठे है । गफलत होने पर कैसे प्राप्त होगा ।

•

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) का १६ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के साथ सम्पूर्ण धर्मकुल के शुभ आशीर्वाद से तथा पू. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी (नाथद्वारा) की शुभ प्रेरणा और बापुनगर मंदिर के दोनो महंत स्वामी स.गु. स्वामी धर्मस्वरुपदासजी और शा. स्वामी वासुदेवचरणदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से ता. २१-२-२१ से २५-२-२१ तक अ.सौ. अरुणाबेन चंद्रकांतभाई बेलाणी परिवार के मुख्य यजमान पद तथा सह यजमान प.भ. बाबुभाई पोपटभाई शींगाणा तथा अन्य सेवा भावी यजमानो के सेवा भावना से एर्पोच मंदिर का १६ वाँ पाटोत्सव उमंग और उल्लासपूर्वक मनाया गया ।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में स.गु. मुक्तानदं स्वामी रचित सुप्रसिद्ध आर्ती जय सद् गुरु स्वामी के विवेचन कथा महंत शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी के वक्ता पद से संगीतज्ञ गायकवृंद के साथ सुंदर पांच दिन का आयोजन किया गाय था । कथा के समय सम्प्रदाय की मर्यादा के अनुसार संतो के साथ भक्ति भजन के साथ भक्तजनोने सुंदर रासोत्सव का लाभ लिये थे । इस अवसर पर अहमदाबाद (कालुपुर) मंदिर के पूजारी ब्र. स्वामी मुकुंदानंदजीने नंद संतो के द्वारा रचित कीर्तन का गान किये थे। सभी को प्रोत्साहित भी किये ते । कथा के समय अहमदाबाद, भुज, गढपुर, जुनागढ, धोलका, धोलेरा, गांधीनगर, नारायणघाट, कांकरिया, द्वारिका, तलाजा इत्यादि धामो से ब्रह्मनिष्ठ संत-महंत पधारकर प्रसंगोचित आशीर्वाद दिये थे । सभा का संचालन प्रतिदिन स्वामी हरिप्रकाशदासजीने सुंदर रुप से किये थे ।

संतो द्वारा बालस्वरुप घनश्याम महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कमलो द्वारा अन्नकूट की आरती की गई थी । स्त्री भक्तो द्ारा अपने घर से बनाये गये । अन्नकूट की थाली लगायी गयी थी । अन्नकूट प्रसाद का वितरण श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा अनाथ आश्रम के बालको तथा वृद्धाश्रम में किया गया था । प्रतिदिन का के समाप्ति पर सुंदर नास्ता का प्रबन्धकिया गया था । ता. २४-२-२१ के दिन निःशुल्क मेडिकल कैम्प का प्रबन्धकिया गया था । कोरोना महामारी के विबस काल के सामान्य अवस्था में जनवरी २०२१ से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने प्रत्येक शनिवार को साप्ताहिक सत्संग सभा का नियमति प्रबन्धकिये है ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा यहाँ के मंदिर के महंत शा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन-प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) श्री स्वामिनारायण म्युजियम नारणपुरा तक भव्य पदयात्रा ता. ७-२-२१ रविवार को १०८ हरिभक्तो और संत मंडल के साथ प्रातः ५ बजे श्री नरनारायणदेव के रथ के साथ धुन-कीर्तन करते हुए प्रयाण किये थे ।

प्रातः ७-३० पर कोबा सर्कल के पास श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर द्वारा सभी यात्रिको को मशालेदार गर्म दूधका वितरण प्रसाद के रुप में किया गया था । प्रातः ८-३० पर मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का दर्शन करके, वहाँ के भक्तो द्वारा पौष्टिक नास्ता मिला था । प्रातः १०-३० पर श्री स्वामिनारायण म्युजियम तक पदयात्रा वाले आ गये थे । वहाँ पर ८-०० बजे से लेकर १०-३० तक श्री नरनारायणदेव का महाभिषेक गांधीनगर के हरिभक्त यजमानो द्वारा किया गया था । जिसका लाभ सभी पदयात्री संत-हरिभक्तोने लिया था । महापूजा की पूर्णाहुति की आरती प.पू. बड़े महाराजश्री के करकमलो से पूर्ण की गयी । सभी पद यात्रिको को प.पू. बड़े महाराजश्रीने दर्शन आशीर्वाद दिया । सभी ने इस अलौकिक प्रसाद का लाभ लिये ।(विपीनभाई पटेल - गाँधीनगर)

गांधीनगर मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का इलायची का वाधा (वस्त्र)

गांधीनगर (से-२) अपने मंदिर में बिराजमान सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज को इलायची का अलौकिक मनमोहक वाधा बनाकर पहनाया गया था । जिसके यजमान प.भ. सुशीलाबेन रणछोडबाई पटेल की ४१ वी शादी की वर्षगांठ के अवसर किया गया था । वाधा की सुंदर सेवा श्री नरनारायणदेव महिला मंडल द्वारा कि गई थी । (स्वा. देवप्रकाशदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जामफलवाडी (अहमदाबाद) पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से और गांधीनगर (से-२) मंदिर के महंत शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर जामफलवाडी का ८ वाँ पाटोत्सव ता. ९-२-२१ के दिन अच्छे से मनाया गया था । इस अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक, महापूजा, ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग लगाया था । स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) यह भगवान के लीलाचरित्र को सुनाये थे । इस प्रसंग में शा. गोपालजीवनदासजी (प्रांतीज), घनश्याम स्वामी (गांधीनगर), स्वामी देवप्रकाशदासजी (गांधीनगर), स्वा. निलकंठचरणदासजी (मूली) और पार्षद महेन्द्र भगत (कोटेश्वर) सेवा मे जुडे थे । (स्वा. देवप्रकाशदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बीजापुर सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री गांधीनगर) की प्रेरणा-मार्गदर्शन से ता. २८-१-२१ के दिन कोरोना के बाद प्रथम मासिक सभा बीजापुर में की गई थी । जिसमें पूजारी स्वामी कुंजविहारीदासजीने कथा-वार्ता का लाभ दिये थे । अब प्रत्येक पूर्णिमा को सत्संग सभा नियमित होगी ।(स्वा. देवप्रकाशदास - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वरसोडा (माणसा) सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से ता. ३०-१-२१ के दिन कोरोना के बाद प्रथम सभा वरसोडा गाँव में स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) वक्तता पद नियुक्त किये गये थे । हरिभक्त कथा सुनगर धन्य बने । अब प्रत्येक पूर्णिमा को सभा की जायेगी ।(स्वा. देवप्रकाशदास - गांधीनगर)

शीलजमें शाकोत्सव

श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से एवम् प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से ता. ३१-१-२१ के दिन श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल शीलत द्वारा शाकोत्सव उत्सावपूर्वक मनाया गया था । जिस में शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी, शा. गोपालजीवनदासजी, स्वा. घनश्यामप्रकाशदास और पार्षद महेन्द्र भगत आदि गांधीनगर (से-२) संत-पार्षद मंडल ने कथा-वार्ता का सुंदर लाभ दिये थे ।(देवप्रकाश स्वामी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से ता. ३१-१-२१ के दिन मोटेरा मंदिर में सुंदर सत्संग किया गया था । जिसमें पू. पी.पी. स्वामी और स्वामी नीलकंठचरणदासजी (मूली) ने कथा का लाभ दिये थे ।(स्वा. देवप्रकाशदास - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा का ५ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजी तथा कोठारी सर्वेश्वरदासजी एवम् स्वा. सुखनंदनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा में विराजमान सर्वोपरि भगवान श्रीहरि का ५ वाँ पाटोत्सव यहाँ के श्री भाविनभाई शेठ, रंजनबेन जगदीशभाई शेठ के यजमान पद से पूर्ण किया गया था । ठाकरुजी का अभिषेक यजमान परिवार द्वारा किया गया था । संतो द्वारा बनाया गया अलौकिक अन्नकूट ठाकुरजी को चढाया गया था । महंत स्वामी ने सभी को आशीर्वाद दिये ।(के.बी. प्रजापति - मोडासा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव के १९८ वाँ पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मूली मंदिर के स.गु. शा. स्वा. नारायणप्रसादजी की प्रेरणा से महंत स.गु. शा. स्वा. हरिप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से माधसुद-५ बसंत पंचमी को १६-२-२१ के दिन मूली मंदिर में बिराजमान महाप्रतापी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का १९८ वाँ पाटोत्सव सरकार के निर्देशानुसार उल्लासपूर्वक मनाया गया ।

इस अवसर पर त्रिदिवसीय पारायण स.गु. शा. स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी तथा साधु सत्संग सागरदासजी के वक्ता पद से हुई थी । इस अवसर पर ठाकुरजी का महाअभिषेक, अन्नकूटोत्सव, वसंतकी पूजा, श्री शिक्षापत्री समूह पाठ और स.गु. ब्रह्मानदं स्वामी के प्रतिमा की पूजा विधिवत रुप से पूर्ण

की गई । पूरे पाटोत्सव के यजमान प.भ. भगवानजीभाई माधवजी परमार (बोडका) परिवार था ।

इस अवसर पर अन्नकूट आरती और यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू. लालजी महाराज एवम् प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे । तथा हृदयपूर्क आशीर्वाद दिये थे । सम्पूर्ण सभा का संचालन शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी और पार्षद भरत भगतने किया था । धामो धाम से संत और सांख्ययोगी बहने भी आई थी ।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर को १५ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर के पूज्य स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर का १५ वाँ पाटोत्सव अच्छी तरह से कोविड निर्देशानुसार मनाया गया था । ता. २-१२-२० को उत्सव हुआ था । जिसके यजमान प.भ. कानजीभाई छगनभाई गढिया परिवार था । प्रातः काल ठाकरुजी का महाभिषेक, अन्नकूट, यज्ञ किया गया था । शा. स्वा. सत्संगसागरदासजी और शा. स्वा. नित्यप्रकाशदासजीने कथामृत का पान कराया था । और सेवा में शा. स्वा. प्रेमवल्लभदासजी, शांति स्वामी, त्याग स्वामी, भक्ति स्वामी और कनु भगत थे ।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

टींबा गाँव में कथा पारायण

मूलीधाम निवासी परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के परम कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से सुरेन्द्रनगर मंदिर के पू. स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से टींबा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २४-१-२०२१ से २८-१-२०२१ तक श्री यमदंड तथा पारायण स.गु. शा.स्वा. सत्संगसागरदासजी के वक्ता पद से हुई थी ।

गाँव के सभी हरिभक्त कथा सुनकर धन्य हुई । इस अवसर पर मूली, सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी संत मंडल के साथ आये थे । सभा का संचालन पुराणी स्वामी नित्यप्रकाशदासजीने किया था ।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

चूडा श्री स्वामिनारायण मंदिर का ११२ वाँ पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के परम कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के पू. महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी के प्रेरणा से श्रीहरि के पवित्र चरणो से महापवित्र चूडा गाँव में मंदिर को स.गु. देवानंद स्वामी ने बनवाया था । इस मंदिर का ११२ वाँ पाटोत्सव ता. ५-२-२१ को उल्लास के साथ मनाया गया ।

इस अवसर पर १-२-२१ से ५-२-२१ तक श्रीमद् पुरुषोत्तम प्रकाश ग्रन्थ की पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वामी सत्संगसागरदासजी के वक्ता पद से पूर्ण हुई ।

ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट का दर्शन और कथा श्रवण करके हरिभक्त धन्य हुए । इस अवसर पर मूली और सुरेन्द्रनगर मंदिर से संत आये थे । सभा का संचालन स.गु. पुराणी स्वामी नित्यप्रकाशदासजीने कीया था । सम्पूर्ण प्रसंग में मार्गदर्शक शा. स्वामी प्रेमवल्लभदासजी थे । गाँव के सभी हरिभक्त देव दर्शन और कथा का लाभ लेकर कृतार्थ हुए । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिडनी (ब्लेक टाउन)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने ओस्ट्रेलिया सिडनी (ब्लेक टाउन) श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ७-२-२१ के दिन माधस्नान का प्रबन्धकिया गया था । मंदिर से एक घंटे की दूरी पर समुद्रतट पर श्रीहरिकृष्ण महाराज के साथ श्री स्वामिनारायण महामंत्र का जाप करते सभी हरिभक्त और छोटे बच्चे माधस्नान किये थे । साथ ही साथ श्रीहरिकृष्ण महाराज को जलाभिषेक किया गया था । इसके बाद सभी ने ठाकुरजी की आरती करके श्रीहरि के चरणो में नतमस्तक होकर प्रार्थना किये थे ।

ता. १६-२-२१ को महासुद पंचमी (बसंत पंचमी) को शिक्षापत्री जयंती को शिक्षापत्री का पाठन-पूजन अर्चन किया गया था । जिस में भाई-बहन तथा वृद्ध और बालकोने भाग लिया था । सभी हरिभक्तोने शिक्षापत्री के अलग-अलग श्लोक का पाठन किये थे ।

अंत में ठाकरुजी की संध्या आरती की गई । श्री शिक्षापत्री की आरती बाद श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री के अनुसार जीवन व्यतित करने के प्रार्थना की गई । (प्रितेश काशव - सिडनी)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

गोविंदपुरा नूतन मंदिर की खातविधि करते संत। (२) महेसाना मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक दर्शन। (३) अपने विहोकन न्यूजर्सी मंदिर द्वारा कोरना ग्रस्त के लिए फूड पैकेट वितरण किया गया। (४) शिकागो (अमेरिका) मंदिर में शिक्षापत्री जयंती मनाई गई। (५) सिडनी (ओस्ट्रेलीया) मंदिर में शिक्षापत्री जयंती का उत्सव मनाते हरिभक्त। (६) मोडासा मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 591/2021-2023
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

भारतीय सेना के ब्रिगेडीयर एन्थनी ग्रोसी जो ध्रांगध्रा मिलेटरी स्टेशन के कमान्डर है। वो प.पू. आचार्य महाराजश्री के निवास स्थान पर शुभेच्छा भेट के लिये आये थे। उस समय प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ।

हेल्थकेयर तथा उत्कृष्ट नेतृत्व के लिये, सर्वोच्च एवार्ड प.पू. आचार्य महाराजश्री के पारिवारिक सदस्य श्री डॉ. विनीत मिश्रा (निर्देशक I.K.D.R.C.) को मिला था। उसका सन्मान महाराजश्री के निवास स्थान पर कीया गया।

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये ओनलाईन डोनेशन
कालुपुर मंदिर की ओफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है।
htpp://www.swaminarayan.in/donation

Praful Kharsani